321hi27

27

वस्त्रों की देखरेख और साज संभाल

हम सभी जानते हैं कि प्रयोग करते रहने से वस्त्रों पर मैल जम जाता है। वस्त्रों को लम्बे समय तक उपयोग करने के लिये, हमें उन्हें नियमित रूप से धोकर, सुखाकर, इस्त्री करके पहनना होगा। अतः हमारे लिये अपने वस्त्रों की देखभाल करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

आप यह भी जानते हैं कि सभी कपड़ों को एक ही प्रकार से नहीं धोया जा सकता। कुछ कपड़ों को धोने के लिये गर्म तो कुछ कपड़ों को ठंडे पानी की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार धोने के बाद कुछ कपड़ों को सुखाने के लिये या तो तार पर डाला जाता है तो कुछ को समतल जमीन पर। इसका अर्थ है, भिन्न–भिन्न प्रकार के कपड़ों को ६ ोते समय भिन्न–भिन्न प्रकार की देखभाल की आवश्यकता होती है।

आइये देखें यह विधियां क्या हैं और किस प्रकार भिन्न–भिन्न वस्त्रों की देखभाल की जानी चाहिये।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप निम्नलिखित कर सकेंगे:

- कपड़ों की देखरेख की आवश्यकता का उल्लेख तथा धुलाई व ड्राइक्लीनिंग में अंतर;
- धुलाई के आधारभूत चरणों की व्याख्या;
- साबुन, डिटर्जेंट व अन्य सहायक सामग्री का सूचीकरण व उनके उपयोग की व्याख्या;
- विभिन्न प्रकार के वस्त्रों से दाग छुड़ाने की विधियों का वर्णन;
- धुलाई की विभिन्न विधियों का तथा वस्त्र के अनुसार उनके चयन का वर्णन;
- कपड़ों का भण्डारण करते समय ध्यान में रखने योग्य सावधानियां;
- ड्राइक्लीनिंग प्रक्रिया की व्याख्या।

टिप्पणी

27.1 कपड़ों की देख रेख

सबसे पहले हमें यह जानना होगा कि कपड़ों की देखरेख क्यों आवश्यक है। हम सभी जानते हैं कि जब हम कपड़े पहनते हैं तब वे धूल, चिकनाई, पसीने इत्यादि के कारण गंदे हो जाते हैं। यदि यह गंदगी कपड़े पर लगी रहे तो कपड़ा भद्दा लगता है। गंदे कपड़े कमजोर भी हो जाते हैं व उन पर दाग धब्बे पड़ जाते हैं। सूखी गंदगी को झाड़ पर हटाया जा सकता है लेकिन चिकनाई युक्त गंदगी को हटान के लिये विशेष पद्धति की आवश्यकता होती है।

27.2 धुलाई का अर्थ

हममें से ज्यादातर लोगों का मानना है कि धुलाई का अर्थ सिर्फ कपड़ों का धोना है। परन्तु वास्तव में धुलाई के अन्तर्गत धोना, सुखाना व उसकी परिसज्जा की प्रक्रिया भी शामिल है।

कपड़ों को धोना, सुखाना और उनकी परिसज्जा करना ही धुलाई है।

ड्राइक्लीनिंग

कुछ कपड़ों को धोया नहीं जा सकता। इनकी सफाई विलायक/चिकनाई अवशोषकों द्वारा की जाती है। दूसरे शब्दों में, इन कपड़ों की धुलाई पानी के प्रयोग के बिना की जाती है क्योंकि पानी से इन कपड़ों व उनके रंगों को हानि पहुँच सकती है। आपको इस पाठ के अंत में ड्राइक्लीनिंग के विषय में और अधिक जानकारी दी जायेगी।

27.2.1 धुलाई के चरण

घर पर धुलाई करते समय कपड़ों को निम्न आधार पर अलग करते हैं जैसे, रंगीन/सफेद, सूती/ऊनी/रेशमी, कम गंदा/ज़्यादा गंदा, इत्यादि।

ऐसा इसलिये करते हैं कि आप जानते हैं कि सब प्रकार के वस्त्रों को एक साथ नहीं धोया जा सकता। धुलाई को अधिक व्यवस्थित करने के लिये कुछ प्रारम्भिक तैयारियां धुलाई से पूर्व ही की जाती हैं। यह निम्नलिखित हैं–

(1) **मरम्मत करना** - धुलने वाले वस्त्रों की सावधानीपूर्वक पहले जाँच कर लें कि कहीं पर वस्त्र फटा तो नहीं है या कोई बटन ढीला तो नहीं है। यदि ऐसा है तो फटे भाग को सिलकर व टूटे या ढीले बटन को लगाने के बाद ही धुलाई करें। क्या आप बता सकते हैं, क्यों?

(2) **धब्बा छुड़ाना** - यदि मैल के अतिरिक्त आपके वस्त्र पर कोई दाग या धब्बा है तो उन्हें पहले छुड़ा लीजिये। अन्यथा वह या तो फैल जायेगा या पक्का हो जायेगा और फिर वह दाग अन्य वस्त्रों पर भी लग सकता है।

चित्र 27.1: धब्बे छुड़ाना

(3) **कपड़ों की छंटाई** - वस्त्रों को उनके तन्तुओं के आधार पर अलग कर लीजिये, जैसे सूती, ऊनी व रेशमी व मानव निर्मित वस्त्रों को अलग व सफेद व रंगीन वस्त्रों को पृथक ही धोना चाहिये। इसके अलावा कुछ अत्यधिक गंदे वस्त्र जैसे झाड़न आदि को भी अलग ही धोना उचित है।

(4) **भिगोना** - क्या आप धोने से पहले अपने वस्त्रों को भिगोते हैं? भिगोने से मैल फूल जाता है और धोने पर आसानी से निकल जाता है। परन्तु सभी प्रकार के वस्त्रों को भिगोने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। उदाहरण के लिये, जिन वस्त्रों के रंग पक्के नहीं हैं, उन्हें भिगोना नहीं चाहिये। ऊनी वस्त्रों को भी भिगोया नहीं जाता क्योंकि भिगोने से ऊनी वस्त्र जुड़ जाते हैं।

चित्र 27.2: कपड़ों को भिगोना

(5) **धुलाई** - अब वस्त्रों को उचित डिटर्जेंट/साबुन और सही धुलाई की विधि से धोया जाता है। इसके विषय में आप विस्तार से पाठ के अंत में पढ़ेंगे। धुलाई की प्रक्रिया वस्त्रों से मैल छुड़ाने में सहायक होती है।

चित्र 27.3: खंगालना

(6) **खंगालना** - वस्त्रों से साबुन/डिटर्जेंट या रासायनिक पदार्थों को निकाल दिया जाना चाहिये। अतः कपड़ों को स्वच्छ जल में 2 से 4 बार खंगाला जाता है। दरअसल जब तक सारा साबुन/डिटर्जेंट निकल न जाये तब तक कपड़ों को खंगालना चाहिये।

टिप्पणी

(7) **कलफ लगाना व नील लगाना** - यदि कपड़ों पर मांड या कलफ लगाने की आवश्यकता है तो उन्हें स्टार्च या कलफ किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त कपड़ों की सफेदी बनाए रखने के लिये उन्हें नील लगाना भी आवश्यक है। इसकी विस्तृत व्याख्या अगले भाग में की जायेगी।

(8) **सुखाना** - संभवतया आप जानते होंगे कि कपड़ों को सुखाने के भी भिन्न तरीके हैं। सफेद कपड़े धूप में व रंगीन कपड़े छाया में सुखाये जाते हैं। रेशमी कपड़े, सफेद या रंगीन, छाया में सुखाए जाते हैं। सिंथेटिक वस्त्र हैंगर पर, छाया में सुखाने चाहिए तथा ऊनी वस्त्र छाया में, समतल जमीन पर सुखाये जाते हैं।

(9) **इस्त्री करना** - धुलाई का अंतिम चरण इस्त्री करना है। कपड़ों पर इस्त्री भी उनकी प्रकृति के अनुसार की जाती है। कपड़ों पर पानी छिड़का जाता है और गर्म इस्त्री की सहायता से उन पर प्रैस की जाती है। रेशमी कपड़ों पर नमी रहते हुये ही गर्म इस्त्री की जाती है। मानव निर्मित वस्त्रों व रेयॉन पर मध्यम गर्म इस्तिरी की जाती है। ऊनी वस्त्रों के ऊपर एक गीला मलमल का कपड़ा बिछाने के बाद ही इस्त्री की जाती है।

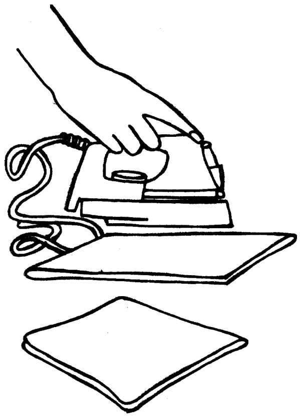

चित्र 27.4: इस्त्री करना

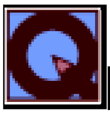

पाठगत प्रश्न 27.1

1. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–
   (i) कपड़ों की छंटाई
   (ii) धुलाई व खंगालना
   (iii) इस्त्री करना

27.3 डिटर्जेंट

डिटर्जेंट वह उत्पाद है जो स्वच्छ करने में सक्षम है। डिटर्जेंट दो प्रकार के हो सकते हैं–साबुन और सिन्डेट्स।

(a) साबुन को प्राकृतिक तेल/वसा और मोम को मिलाकर प्राप्त किया जाता है।

(b) सिन्डेट वह सफाई सामग्री है जो रसायनों को संश्लेषित करके बनायी जाती है।

अपनी दिनचर्या में आपने साबुन का प्रयोग अवश्य किया होगा। आपने साबुन के विभिन्न गुणों का अवलोकन किया होगा। साबुन एक अच्छी सफाई सामग्री है। परंतु

क्या आप जानते हैं कि सिन्डेट साबुन से भी अच्छा होता है? दोनों ही प्रकार की सफाई सामग्री कपड़े पर पानी के प्रवेश को सुगम बनाती है क्योंकि इनके प्रयोग से पानी का सतह तनाव कम हो जाता है।

परंतु साबुन और सिन्डेट्स में कुछ अंतर भी हैं ये अंतर हैं–

(i) साबुन कपड़े को पानी से जल्दी गीला करते हैं परंतु सिन्डेट उससे भी अधिक तत्परता से कार्य करते हैं।

(ii) आपने यह भी देखा होगा कि साबुन गर्म पानी में, ठंडे पानी की अपेक्षा जल्दी धुलता है परंतु सिन्डेट ठंडे व गर्म पानी में एक समान ही घुलते हैं।

(iii) सिन्डेट कठोर पानी में भी अच्छी धुलाई करते हैं जबकि साबुन सिर्फ मृदु पानी में ही अच्छा झाग बनाते हैं।

(iv) साबुन की अपनी विशिष्ट गंध नहीं होती परंतु सिन्डेट की अच्छी सुगंध होती है। अतः सिन्डेट में धुले कपड़े अच्छे व खुशबूदार लगते हैं।

(v) साबुन से धुलाई के पश्चात सफेद कपड़ों पर नील लगाने की आवश्यकता पड़ती है। जबकि सिन्डेट में नील और सफेदी बढ़ाने वाले तत्त्व पहले से ही मिले होते हैं।

(vi) आपने देखा होगा कि साबुन की कुछ धुलाइयों के बाद कपड़े फीके व निष्प्रभ दिखाई देते हैं क्योंकि कपड़ों पर से साबुन के अंश धुलाई से निकल नहीं पाते। सिन्डेट इस प्रकार के कोई भी अंश नहीं छोड़ता अतः धुलने के बाद कपड़े बेजान नहीं दिखते।

(vii) साबुन सिन्डेट की तुलना में सस्ते होते हैं। परंतु यदि साबुन से धुलाई के बाद कपड़े फीके व बेजान दिखते हैं तो सस्ते साबुन से थोड़ा मंहगा सिन्डेट ही अच्छा है।

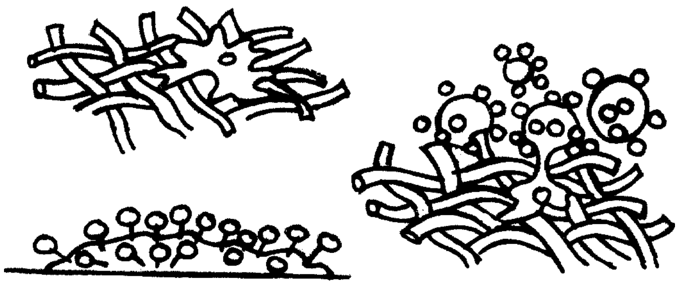

चित्र 27.5 कपड़ों से गंदगी हटना

पाठगत प्रश्न 27.2

1. नीचे लिखे तथ्यों को सही (√) या गलत (X) चिह्नित कीजिये और गलत तथ्यों का सही उत्तर बताइये।

टिप्पणी

i) साबुन व सिन्डेट दोनों डिटर्जेंट हैं।

ii) सफाई सामग्री के लिये कच्चा माल प्राकृतिक होता है।

iii) साबुन की अपेक्षा सिन्डेट में वस्त्रों में प्रवेश करने की क्षमता अधिक होती है।

iv) सिन्डेट के प्रयोग से वस्त्र फीके व बेजान दिखते हैं।

[redacted] धोने के पश्चात आप क्या करते हैं? सफेद सूती कपड़ों की सफेदी बनाये रखने के लिये आप क्या करते हैं? सूती कपड़ों को कड़क बनाने के लिये आप क्या करते हैं? सिल्क को चरख चढ़ाने के लिये क्यों भेजते हैं? यह स्पष्ट है कि सफाई सामग्री के अतिरिक्त कुछ अन्य चीजें भी हैं जो धुलाई के समय कपड़ों को नया जीवन देने के लिये अत्यावश्यक हैं। ऐसी अन्य चीजें ही सहायक सामग्री कहलाती हैं। क्या आप धुलाई के लिये आवश्यक सहायक सामग्री को परिभाषित कर सकते हैं? इसकी परिभाषा निम्न प्रकार से है–

> धुलाई की प्रक्रिया में सफाई सामग्री के अतिरिक्त वस्त्रों को अच्छी परिसज्जा देने के लिये प्रयुक्त उत्पाद सहायक सामग्री कहलाता है।

क्या आप धुलाई प्रक्रिया में काम आने वाली कुछ सहायक सामग्री की सूची बना सकते हैं? ये हैं–

- नील
- ऑप्टिकल ब्राइटनिंग एजेंन्ट (O.B.A) या सफेदी देने वाले तत्त्व
- दाग छुड़ाने वाले पदार्थ
- कड़क करने वाले पदार्थ

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि 2–3 बार की धुलाई के बाद आपके सफेद सूती व लिनन के कपड़े पीले पड़ने लगते हैं। कपड़े के पीलेपन को कम करने के लिये आप नील का इस्तेमाल करते हैं। आपको बता दें कि सफेदी बनाये रखने के लिये नील के अतिरिक्त आप विरंजक व चमक लाने वाले पदार्थ भी प्रयोग में ला सकते हैं।

वस्त्रों का पीलापन निम्न द्वारा दूर किया जा सकता है।

नील	ओ. बी. ए. (ऑप्टिकल ब्राइटनिंग एजेन्ट)	विरंजक

(a) नील

नील एक प्रकार का पदार्थ है जो कपड़ों में सफेदी लाने के लिये प्रयोग किया जाता है। यह रसायन, वनस्पति और खनिज स्रोतों से प्राप्त किया जाता है। बाज़ार में यह पाउडर व तरल दोनों ही रूपों में मिलता है। नील कई प्रकार के होते हैं और उनके रंग बैंगनी से नीले और नीले हरे तक होते हैं। जब भी नील लगाना हो–

1. इसको आखिरी बार खंगालने से पहले लगाइए।
2. नील को पानी में अच्छी तरह मिलाने के बाद ही उसमें कपड़े डालने चाहिये। ऐसा करने से कपड़े पर नील के धब्बे नहीं पड़ेंगे और कपड़े पर एक समान नील लगेगा। उदाहरण के लिये अल्ट्रामैरीन नील और प्रशियन नील।

(b) सफेदी देने वाले तत्त्व–ऑप्टिकल ब्राइटनिंग एजेन्ट/फ्लोरोसेन्ट ब्राइटनिंग एजेन्ट (OBA'S/FBA'S)

क्या आपने किसी सिन्डेट के पैकेट पर लिखे पदार्थों की सूची पढ़ी है? आपको उस पर ओ.बी.ए. या एफ.बी.ए. लिखा दिखाई देगा। बाज़ार में आप ओ.बी.ए. भी मांग सकते हैं। ये कई प्रसिद्ध ब्रांड नामों से बाज़ार में उपलब्ध हैं।

ओ.बी.ए. एक प्रकार की रंगहीन डाइ या रंग है। ये फ्लोरोसेन्ट कम्पाउन्ड होते हैं जो कपड़ों पर लगाकर धूप में सुखाए जाने पर बहुत चमकदार रंग देते हैं।

ओ.बी.ए. प्रकाश को अल्ट्रावाइलेट क्षेत्र से ग्रहण करते हैं और उसे दृश्य क्षेत्र (विजिबल क्षेत्र) में परावर्तित कर देते हैं। यह परावर्तित प्रकाश अपने में पीलेपन का विरोध करने की क्षमता रखता है और कपड़े की सफेदी को और बढ़ा देता है। कपड़े सफेद से भी अधिक सफेद दिखाई देते हैं। इसमें कोई रासायनिक प्रतिक्रिया नहीं होती अतः कपड़े पर किसी प्रकार का हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता।

(c) रासायनिक विरंजक – आपने टी.वी. पर विरंजक के कई विज्ञापन देखे होंगे। क्या आप जानते हैं यह क्या है? इसकी संरचना क्या है? और यह किस प्रकार कपड़ों को अधिक सफेद व चमकीला बनाता है? विरंजक को हम इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं–

विरंजक कोई भी ऐसा पदार्थ या मिश्रण है जो रासायनिक क्रिया द्वारा कपड़े को सफेद व चमकदार बनाता है। यह क्रिया ऑक्सीडाइजिंग या रिड्यूसिंग हो सकती है।

विरंजक कपड़े पर से रंगीन पदार्थ हटाने में मदद करते हैं। यह दाग छुड़ाने वाले तत्त्वों के रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं।

विरंजक दो प्रकार के होते हैं।

(a) ऑक्सिडाजिंग विरंजक

(b) रिड्यूसिंग विरंजक

(a) ऑक्सिडाइजिंग विरंजक

इस तरह के विरंजक एक स्थाई प्रभाव छोड़ते हैं। ये मुख्य रूप से वनस्पति रेशे के वस्त्रों जैसे सूती व लिनेन पर इस्तेमाल किये जाते हैं। ऑक्सिडाइजिंग ब्लीच के उदाहरण हैं–

1. **धूप** - दाग छुड़ाने का यह सबसे पुराना व सरल उपाय है, दाग को गीला करिये और घास पर फैला दीजिये। क्लोरोफिल, नमी और हवा की ऑक्सीजन दाग को साफ कर देते हैं।

2. **जावेल जल (सोडियम हाइपोक्लोराइट)** - इस प्रकार के ब्लीच को प्रयोग करने से पहले पानी मिलाकर हल्का कर देना चाहिये। कपड़ों को तब तक ब्लीच में रखा जाता है जब तक धब्बा छूट न जाये। पुनः कपड़े को अच्छी तरह पानी में खंगाल लेना चाहिये जिससे कपड़े पर बचे हुये ब्लीच के अंश पूरी तरह से निकल जायें और कपड़े को हानि न पहुँचा सकें।

3. **पोटेशियम परमैंगनेट और ऑक्सॅलिक अम्ल** - यह रंग, फंफूदी, पसीने और स्याही के धब्बों को छुड़ाने के काम आता है। भूरे रंग के जंग और पान के धब्बे, जो किसी भी कारण कपड़े पर पड़ सकते हैं, ऑक्सेलिक अम्ल व पोटेशियम परमैंगनेट के मिश्रण या केवल ऑक्सेलिक अम्ल से ही छूट पाते हैं।

4. **हाइड्रोजन-पर-ऑक्साइड**- यह वनस्पतिक व जान्तव दोनों प्रकार के तन्तुओं पर प्रयोग किया जाने वाला आम विरंजक है। अतः यह रेशमी, ऊनी व रेयॉन के वस्त्रों के लिये भी सुरक्षित है क्योंकि जान्तव रेशों पर भी इसका हानिकारक प्रभाव नहीं होता। हाइड्र्ोजन–पर–ऑक्साइड को हमेशा गहरे रंग की बोतलों में रखना चाहिये अन्यथा उसका प्रभाव समाप्त होने लगता है।

(b) रिड्यूसिंग ब्लीच

रिड्यूसिंग ब्लीच, ऑक्सीडाइजिंग ब्लीच से कम प्रभावशाली होता है और जान्तव रेशे जैसे ऊन व सिल्क पर प्रयोग किया जाता है। ये विरंजक कपड़े पर स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ते हैं। ऊन व सिल्क अक्सर रिड्यूसिंग ब्लीच लगाने के बाद, हवा के सम्पर्क में आने से पीले पड़ जाते हैं। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि ऊन व सिल्क जान्तव रेशे हैं और उन्हें पूर्णतया सफेद करने के लिये रिड्यूसिंग ब्लीच का प्रयोग किया जाता है। हवा के सम्पर्क में आते ही कपड़ा पीला पड़ जाता है और ब्लीच का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

रिड्यूसिंग ब्लीच के उदाहरण–

1. सोडियम हाइड्रोसल्फाइट
2. सोडियम बाइसल्फाइट

पाठगत प्रश्न 27.3

1. नीचे लिखे वक्तव्यों को सही या गलत चिहृनित कीजिये और गलत तथ्यों के सही उत्तर बताइये।
   i) विरंजन के बाद कपड़े को खंगालना नहीं चाहिये और विरंजक को कपड़े पर ही रहने देना चाहिये।
   ii) विरंजक रासायनिक प्रक्रिया द्वारा वस्त्रों को सफेद व रंग को हल्का करता है।
   iii) धूप व नमी कपड़े पर विरंजन का प्रभाव छोड़ती है।
   iv) सोडियम बाइसल्फाईट जान्तव तन्तुओं पर प्रयोग करने के लिये सुरक्षित है।
2. निम्न वाक्यों के लिये एक शब्द बताइये।
   i) एक रासायनिक मिश्रण जो कपड़े से रंगीन पदार्थ हटाने की क्षमता रखता है और कपड़ों को अधिक सफेद व चमकदार बनाता है।
   ii) दाग धब्बे छुड़ाने का सबसे पुराना व सस्ता तरीका।
   iii) कपड़ों पर से भूरे रंग का दाग हटाने में समर्थ विरंजक।
   iv) ऐसा विरंजक जो वनस्पतिक व जान्तव दोनों प्रकार के रेशों पर सुरक्षात्मक ढंग से प्रयोग किया जा सके।
   v) शुद्ध सफेद ऊन और सिल्क समय के साथ इस विरंजक के कारण पीले पड़ जाते हैं।

27.5 दाग-धब्बे छुड़ाना

गंदगी के अतिरिक्त कपड़े पर कोई भी निशान, दाग या धब्बा है। उदाहरण के लिये खाना खाते समय यदि अचार और सब्जी आपकी कमीज पर गिर जाय या लिखते समय स्याही गिर जाय या दरवाजे पर लगा हुआ गीले पेन्ट कपड़ों पर लग जाय, तो ऐसे निशानों को धब्बे या दाग कहते हैं। यदि इनको कपड़ों पर लम्बे समय तक लगा रहने दें तो ये वस्त्र भद्दे लगते हैं।

दाग को कैसे पहचानें

दाग छुड़ाने के लिये कौन सी विधि अपनाई जायेगी यह निश्चित करने से पहले, दाग

टिप्पणी

की पहचान करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसके लिये निम्न पर विचार करना आवश्यक है।

चित्र 27.6

a) **रंग** - हर धब्बे का एक विशेष रंग होता है। उदाहरण के लिये सब्जी या अचार के दाग पीले होते हैं जबकि कॉफी और चाय के दाग भूरे व घास के धब्बे हरे होते हैं।

b) **गंध** - कुछ धब्बों की विशेष गंध होती है। उदाहरण के लिये अण्डे और पेंट के धब्बे। इन धब्बों को इनकी गंध से पहचाना जा सकता है।

c) **स्पर्श** - कुछ धब्बे कपड़ों का स्पर्श परिवर्तित कर देते हैं और इसी आधार पर उन्हें पहचाना जा सकता है। उदाहरण के लिये पेन्ट और चाशनी के दाग कपड़े को स्पर्श करने में कड़े लगते हैं। जबकि लिपस्टिक व जूते की पॉलिश के दाग कपड़े को चिकना स्पर्श देते हैं।

क्रियाकलाप 27.1 - कपड़े के 2"/2" के टुकड़ों पर लिपस्टिक, नेलपॉलिश, स्याही, जूते की पॉलिश, सब्जी, अचार, दूध, रक्त आदि के दाग लगाइए और फिर उन्हें उनके रंग, गंध, व स्पर्श के आधार पर पहचानिये। अपने निष्कर्षों को निम्न टेबल बनाकर रिकॉर्ड करिये।

तालिका 27.1

क्र0सं0	निरीक्षण	धब्बा
(1)	रंग .... गंध .... स्पर्श	
(2)	रंग .... गंध .... स्पर्श	

टिप्पणी

धब्बों को निम्न भागों में विभाजित किया जा सकता है और विभाजन के आधार पर प्रत्येक समूह से धब्बू छुड़ाये जा सकते हैं।

1. वनस्पति धब्बे – जैसे सब्जी, चाय व कॉफी के।
2. जान्तव धब्बे – जैसे दूध व रक्त के।
3. चिकनाई के धब्बे – जैसे अचार, सब्जी व जूते की पॉलिश के।
4. घास के धब्बे।
5. अन्य प्रकार के धब्बे जैसे रंग, आदि के।

27.5.2 दाग छुड़ाने की विधियां

चित्र 27.7: भिगोकर

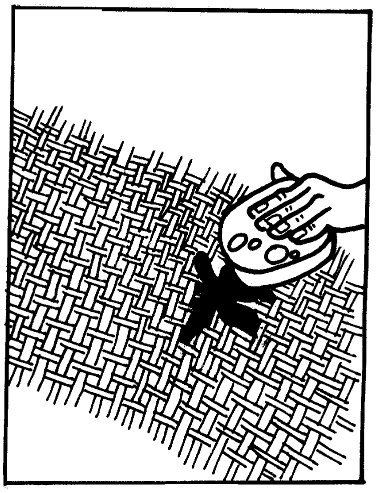

चित्र 27.8: स्पंज की सहायता से

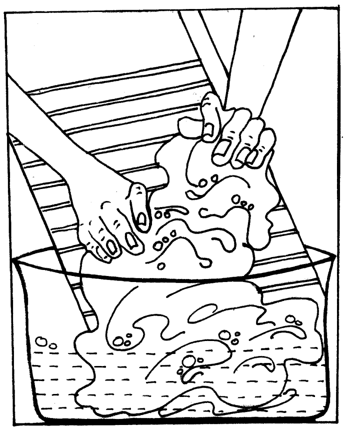

चित्र 27.9: बूंद डालकर

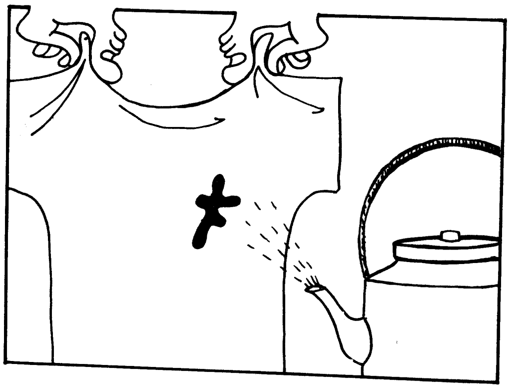

चित्र 27.10: भाप द्वारा

27.5.3 दाग छुड़ाते समय सावधानियां

धब्बों को बहुत सावधानीपूर्वक छुड़ाना चाहिये। यदि कुछ आवश्यक सावधानियां नहीं

बरती गई तो कपड़े को क्षति पहुँच सकती है। अतः जब भी दाग छुड़ाना हो निम्न सावधानियां अवश्य बरतें–

1. जहाँ तक संभव हो दाग को ताज़ा ही छुड़ा लें।
2. कपड़े को पहचानने की कोशिश करें कि कपड़ा सूती, रेशमी ऊनी या सिंथेटिक है।
3. दाग को भी पहचानें।
4. अज्ञात धब्बों के लिये पहले दाग छुड़ाने की सरलतम विधियों से प्रारम्भ करें और उसके पश्चात ही जटिल विधि को अपनाएं। धब्बे को हमेशा पहले ठंडे पानी से धोएं, क्योंकि रक्त व अंडे के धब्बे को गर्म पानी पक्का बना देता है और फिर उन्हें छुड़ाने में कठिनाई होती है।
5. धब्बे छुड़ाने के लिये प्रयुक्त रसायनों को कपड़ों के लिये हानिकारक नहीं होना चाहिये।
6. कोमल और रंगीन कपड़ों पर रसायन को पहले कपड़े के एक छोटे से हिस्से पर लगाकर देखिये। यदि कपड़े को नुकसान पहुंचता है तो रसायन का प्रयोग न करें।
7. कठोर अभिकर्मक के एक ही बार प्रयोग करने की अपेक्षा मृदु अभिकर्मक के प्रयोग को बार–बार दोहराएं।
8. धब्बे छुड़ाने के बाद सभी प्रकार के वस्त्रों को साबुन व पानी से अवश्य खंगालें ताकि रसायनों के अंश वस्त्र से पूर्णतया निकल जायें।
9. कपड़ों को धूप में सुखायें क्योंकि सूर्य का प्रकाश प्राकृतिक विरंजक का कार्य करता है।

तालिका 27.2 धब्बे छुड़ाने की विधियां

धब्बा	सफेद सूती वस्त्र	रंगीन सूती वस्त्र	रेशमी व ऊनी वस्त्र	सिन्थेटिक/पॉलिएस्टर /नाइलॉन/एक्रिलिक
चाय व कॉफी	**ताजा धब्बा** उबलता हुआ गर्म पानी धब्बे पर डालें (2 कप पानी+ 1/2 चाय का चम्मच बोरेक्स)	गर्म पानी में व बोरेक्स में भिगोयें	रंगीन सूती वस्त्र जैसे	रंगीन सूती वस्त्र जैसे
	पुराना धब्बा धब्बे को ग्लिसरीन में डुबोयें	सफेद सूती वस्त्र जैसे	धब्बे पर हाइड्रोजन–पर ऑक्साइड का घोल डालें और हल्के हाथों से रगड़ें	गर्म पानी में सोडियम परबोरेट की बूंदे डालें और डुबोये रखें जब तक धब्बा छूट न जाय

टिप्पणी

धब्बा	सफेद सूती वस्त्र	रंगीन सूती वस्त्र	रेशमी व ऊनी वस्त्र	सिन्थेटिक/पॉलिएस्टर /नाइलॉन/एक्रिलिक
रक्त अंडा व मांस	**ताजा धब्बा** ठंडे पानी और साबुन से धोयें	सफेद सूती वस्त्र जैसे	सफेद सूती वस्त्र जैसे	सफेद सूती वस्त्र जैसे
	पुराना धब्बा नमक के पानी से धोएं (2 बड़े चम्मच नमक + 1/2 बाल्टी पानी)	सफेद सूती वस्त्र जैसे	सफेद सूती वस्त्र जैसे	सफेद सूती वस्त्र जैसे
घी, मक्खन, तेल, सब्जी	**ताजा धब्बा** धब्बा गर्म पानी और साबुन से धोएं	सूती वस्त्र जैसे	गुनगुने पानी व साबुन से धोएं	रेशमी व ऊनी वस्त्रों जैसे
	पुराना धब्बा साबुन व पानी का पेस्ट बनाएं और धब्बे पर लगायें। धब्बे को धूप में रखें जब तक कि छूट न जाय	सूती वस्त्रों जैसे परंतु धब्बे, धूप में नहीं सुखायें	सूती वस्त्रों जैसे परन्तु छाया में। मृदु साबुन प्रयोग करें	ऊन और सिल्क जैसे

नोट: जब धब्बा ताज़ा हो तो धब्बे पर टेल्कम पाउडर छिड़कें और कुछ घंटों के लिये छोड़ दें। पाउडर को झाड़ दें। यह विधि धब्बे छुड़ाने में मदद करती है और हर प्रकार के कपड़ों के लिये उपयोग में लायी जा सकती है।

	ताजा धब्बा			
पेंट, जूते की पॉलिश, लिपस्टिक, बॉल पेन, नेल पॉलिश	धब्बे की अतिरिक्त मात्रा को खुरच कर निकाल दें। हल्के हाथ से मिट्टी के तेल या स्पिरिट से मलें।	सफेद सूती वस्त्रों जैसे	सफेद सूती वस्त्रों जैसे	सफेद सूती वस्त्रों जैसे

टिप्पणी

	पुराने धब्बों के लिये ऊपर लिखी विधि को 2 या 3 बार दोहराएं।	सफेद सूती वस्त्रों जैसे	सफेद सूती वस्त्रों जैसे	सफेद सूती वस्त्रों जैसे
घास	**ताजा धब्बा** साबुन और पानी से धोएं।	सफेद सूती वस्त्रों जैसे	सफेद सूती वस्त्रों जैसे	सफेद सूती वस्त्रों जैसे
	पुराना धब्बा धब्बे को मिथाइलेटेड स्पिरिट में डुबोयें	सफेद सूती वस्त्रों जैसे	सफेद सूती वस्त्रों जैसे	सफेद सूती वस्त्रों जैसे
पान	**ताजा धब्बा** धब्बे पर प्याज का पेस्ट बनाकर धूप में रख दें	सूती वस्त्रों जैसे, पर छाया में सुखायें।	रंगीन सूती वस्त्रों जैसे	रंगीन सूती वस्त्रों जैसे
धब्बा	**पुराने धब्बे** ऊपर लिखी विधि को 2-3 बार दोहराएं	सफेद सूती वस्त्रों	सफेद सूती वस्त्रों जैसे	सफेद सूती वस्त्रों जैसे
मेहन्दी	**ताजा धब्बा** गुनगुने दूध में आधे घंटे के लिये भिगोयें	सूती वस्त्रों जैसे	रंगीन सूती वस्त्रों जैसे	रंगीन सूती वस्त्रों जैसे
	पुराने धब्बे ऊपर लिखी विधि को 2 या 3 बार दोहरायें	सफेद सूती वस्त्रों जैसे	सफेद सूती वस्त्रों जैसे	सफेद सूती वस्त्रों जैसे

याद रखें, धब्बे निकालने के बाद कपड़े को अच्छी तरह से धो लें ताकि सभी रसायन कपड़े पर से निकल जाएं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 27.4

निम्नलिखित धब्बों को छुड़ाने के लिए प्रत्येक के लिए दी गयी चार विधियों में से सबसे उपयुक्त विधि का चयन करें–

(i) सफेद सूती वस्त्र पर चाय का धब्बा –

(a) नमक के पानी का प्रयोग करें (b) ग्लिसरीन में भिगोयें

(c) नींबू के रस में भिगोयें (d) उबलता हुआ पानी डालें

(ii) रंगीन सूती वस्त्र पर से खून का पुराना धब्बा–

(a) नमक के पानी का प्रयोग करें (b) ग्लिसरीन में भिगोएं

(c) गर्म पानी में भिगोएं (d) गर्म पानी व साबुन से धोएं

(iii) लिपस्टिक का धब्बा–

(a) नमक के पानी का प्रयोग करें (b) ग्लिसरीन में भिगोएं

(c) मिथाइलेटेड स्पिरिट में भिगोएं (d) गर्म पानी और साबुन से धोएं

(iv) जंग का धब्बा–

(a) नमक के पानी का प्रयोग करें (b) नींबू का रस व नमक लगाएं

(c) मिथाइलेटेड स्पिरिट में भिगोएं (d) साबुन और ठंडे पानी से धोएं

(v) रेशमी कपड़ों पर मक्खन का ताजा दाग–

(a) ठंडे पानी से धोएं (b) ठंडे पानी व साबुन से धोएं

(c) नमक लगा कर धूप में छोड़ दें (d) गर्म पानी व साबुन से धोएं

(vi) पॉलिएस्टर वस्त्र पर नेल पॉलिश का धब्बा–

(a) मिथाइलेटिड स्पिरिट में भिगोएं (b) गर्म पानी में भिगोएं

(c) ठण्डे पानी में भिगोएं (d) गर्म पानी व साबुन में भिगोएं

(vii) ऊनी वस्त्र पर स्याही का ताजा धब्बा

(a) ठंडे पानी व साबुन से धोएं (b) उबलते पानी व साबुन से धोएं

(c) नमक व नींबू का रस लगाएं (d) मिथाइलेटेड स्पिरिट में भिगोएं

कपड़ों की मरम्मत करने, धब्बे हटाने, व कपड़े भिगोये जाने के बाद ही वास्तविक धुलाई प्रारम्भ होती है। आप जानते हैं कि वस्त्रों के कुछ खास हिस्से जैसे कफ व कॉलर को ज़्यादा रगड़ने की आवश्यकता होती है क्योंकि वे अधिक गंदे हो जाते हैं।

टिप्पणी

वस्त्रों की धुलाई करते समय तन्तुओं की विशेषताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। क्या आपको याद है कि सूती वस्त्र भीगने पर मज़बूत हो जाते हैं जबकि रेयॉन के कपड़े भीगने पर कमज़ोर हो जाते हैं। यही कारण है कि सूती वस्त्रों को रगड़कर धोया जा सकता है पर रेयॉन के वस्त्रों को हल्के हाथ से धोना चाहिये। ऊनी व रेशमी वस्त्रों को धोते समय भी विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है क्योंकि पानी में ऊनी वस्त्रों का आकार खराब हो जाता है और रेशमी वस्त्र कमज़ोर हो जाते हैं।

चित्र. 27.11

अतः कपड़ों को धुलाई की विधि का चयन करते समय दो कारकों का ध्यान रखना चाहिये। ये हैं–

(1) वस्त्र कितना मैला है, और

(2) वस्त्र किस प्रकार का है जैसे सूती, रेशमी, ऊनी, रेयॉन, नायलॉन आदि।

सामान्यतया धुलाई निम्न प्रकार से की जाती है–

(i) घर्षण धुलाई

(ii) चूषक धुलाई या सक्शन धुलाई

(iii) मसलना

(iv) मशीन द्वारा धुलाई

आइये अब इन विधियों की विस्तार से व्याख्या करें :–

(i) घर्षण धुलाई

यह विधि मज़बूत वस्त्रों जैसे सूती वस्त्रों के लिये उपयुक्त है। घर्षण निम्न प्रकार से प्रयोग किया जाता है।

a) **हाथ द्वारा** – इसका मतलब दोनों हाथों से ज़ोर से वस्त्रों को मलना होता है। यह बहुत मैले छोटी चीजों जैसे छोटे कपड़े, रूमाल आदि के लिये उपयुक्त होती है। इस विधि द्वारा साबुन भी कम लगता है।

b) **प्लास्टिक के ब्रश द्वारा** – मैले वस्त्र को सख्त सतह पर रखकर ब्रश की सहायता से घर्षण दिया जाता है। यह घर में प्रयोग होने वाले अत्यधिक मैले वस्त्रों जैसे झाड़न आदि को साफ करने के लिये प्रयोग किया जाता है।

c) **डंडे से पीटना** – बड़े वस्त्रों जैसे बिस्तर की चादरें इत्यादि को धोने के लिये इस विधि का प्रयोग किया जाता है।

(ii) सक्शन धुलाई

यह विधि तौलिये आदि की धुलाई के लिये प्रयोग में लाई जाती है क्योंकि ये वस्त्र भारी व शयेंदार होते हैं। रोयों के कारण इन वस्त्रों पर ब्रश नहीं लगाया जा सकता।

वस्त्र को टब में साबुन के घोल में रखकर, सक्शन यंन्त्र दबाकर बार–बार ऊपर नीचे किया जाता है। दबाने से उत्पन्न शून्य से मैल ढीला पड़ जाता है।

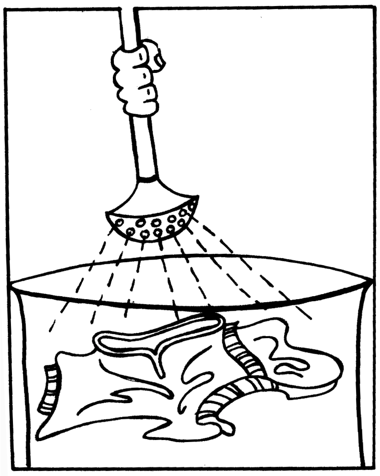

चित्र 27.12: सक्शन धुलाई

(iii) मसलना

यह विधि नाजुक कपड़ों जैसे सिल्क, ऊनी, रेयॉन आदि के लिये प्रयोग की जाती है। इस विधि से वस्त्रों को कुछ हानि नहीं पहुंचती और न ही उनका आकार खराब होता है क्योंकि बहुत ही हल्के हाथों से वस्त्रों को मला जाता है।

चित्र 27.13: मसलकर धोना

(iv) मशीन द्वारा धुलाई

वॉशिंग मशीन एक श्रम बचाने का उपकरण है जो विशेषकर बड़े संस्थानों के लिये उपयुक्त है। आजकल वॉशिंग मशीन घर पर भी प्रयोग की जाती है। धुलाई का समय कपड़ों के प्रकार व मैलेपन पर निर्भर करता है। ऊनी वस्त्र, सूती वस्त्रों की अपेक्षा धुलने में कम समय लेते हैं। मशीन का प्रयोग करने से पहले दिए गए निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़ लेना चाहिए।

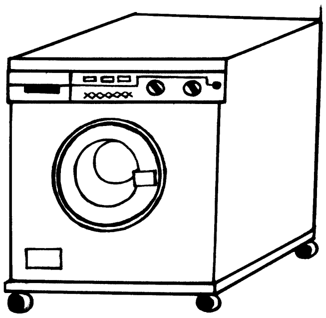

चित्र 27.14: वाशिंग मशीन द्वारा धुलाई

विशिष्ट कपड़ों की धुलाई की विस्तृत विधि चार्ट में अगले पृष्ठ पर दी गयी है।

टिप्पणी

टिप्पणी

टिप्पणी

27.8 कपड़ों का भंडारण

अब तक हमने अपने वस्त्रों को स्वच्छ रखने में ली गयी सावधानियों के विषय में पढ़ा है परन्तु केवल इतना ही काफी नहीं है। यदि हम अपने स्वच्छ वस्त्रों का भंडारण समुचित रूप से नहीं करेंगे तो कीड़े मकौड़े व कपड़े के कीड़े, वस्त्रों को हानि पहुंचा सकते हैं।

आइये अपने कीमती वस्त्रों को बचाने के लिये ली जाने वाली कुछ सावधानियों की सूची बनायें–

1. जेबों को खाली करके कपड़ों को ब्रश से पूरी तरह से झाड़ें ताकि उन पर धूल न रहे।
2. भंडारण से पहले पहने हुए कपड़े को धूप व हवा अवश्य दिखाएं।
3. कपड़ों की ड्राइक्लीनिंग अथवा धुलाई से पहले, उन्हें अधिक मैले न होने दें।
4. नमी वाले वस्त्रों का भंडारण न करें क्योंकि नमी से फफूंदी लगती है। कई बार आपने देखा होगा कि संदूक या अलमारी से निकालने के बाद वस्त्र बदरंग हो जाते हैं। ऐसा फंफूदी के कारण होता है।
5. सभी वस्त्रों को कीटों से बचाना चाहिये। ऐसा तम्बाकू, नीम के सूखे पत्ते, कपूर या नेफ्थालीन की गोलियों जैसे कीटनाशकों के प्रयोग से किया जा सकता है, जैसा कि आप घर पर करते ही आये हैं। ऊनी वस्त्रों को अखबार में लपेटा जा सकता है क्योंकि कीट छपाई की स्याही को नापसन्द करते हैं। संदूकों के अन्दर अखबार बिछाये जा सकते हैं। नीम की सूखी पत्तियाँ, चंदन का पाउडर, यूकेलिप्टस की सूखी पत्तियां आदि भी, सुगंधित रहने तक, प्रभावकारी होती हैं।

अब आप अपने वस्त्रों की आयु बढ़ाने में पूर्णतया सक्षम हैं। जब भी आप अपने कपड़े पहनें व बदलें याद रखें कि आपको आगे क्या करना है ताकि परेशानी न हो। यहाँ ऐसे कुछ प्रतीक चिह्न दिये जा रहे हैं जो आपके वस्त्रों के लेबलों पर लगे होते हैं। इनकी सहायता से आप अपने वस्त्रों की देखभाल भली भाँति कर सकते हैं।

तालिका 27.4 मशीन की धुलाई के चिह्न

चिह्न	*विलोड़न*	*खंगालना*	*सुखाना*	*उपयुक्तता*
तेज गर्म	अधिकतम	सामान्य	सामान्य	सफेद सूती तथा लिनन वस्त्र जिन पर विशिष्ट परिसज्जा न हो।
गर्म	अधिकतम	सामान्य	सामान्य	60^0 सें. पर पक्के रंग वाले सूती, लिनन व विस्कोस के वस्त्र जिन पर विशिष्ट परिसज्जा न हो।
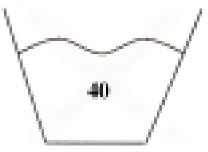 गुनगुना	अधिकतम	सामान्य	सामान्य	सूती, लिनन व विस्कोस वस्त्र जिसके रंग 40^0 सें. पर पक्के हैं पर 60^0 सें. पर नहीं।

चिह्न	*विलोड़न*	*खंगालना*	*सुखाना*	*उपयुक्तता*
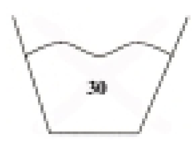 ठण्डा	मध्यम	ठण्डा	कम समय	रेशमी, एसिटेट व ट्राईससिटेट; ऊन मिश्रित वस्त्र; पॉलिएस्टर व ऊनी मिश्रित वस्त्र।

नीचे कुछ चिह्न दर्शाए गए हैं जिन्हें विश्व भर में वस्त्रों के व्यापारी पहचानते हैं। इनका ज्ञान आपको अपने वस्त्रों की देख–रेख करने में विशेष सहायता करेगा।

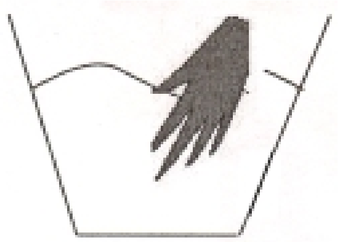

चित्र 27.19 मशीन से न धोएं

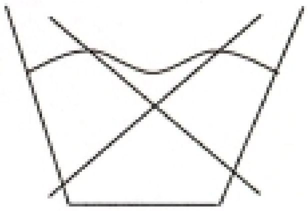

चित्र 27.20 धोएं नहीं

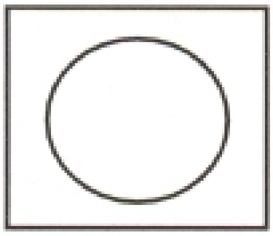

चित्र 27.21 टम्बल कर सुखाएं

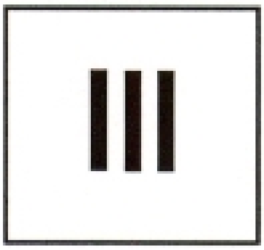

चित्र 27.22 द्रप्सशुष्कन

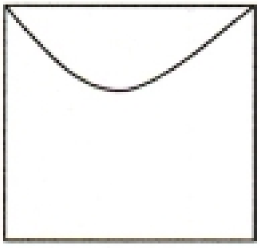

चित्र 27.23 तार पर सुखाएं

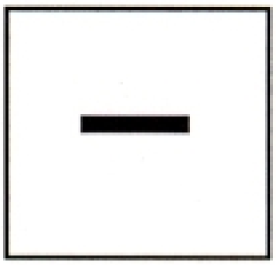

चित्र 27.24 समतल सुखाएं

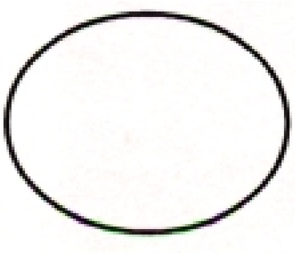

चित्र 27.25 ड्राइक्लीन करें

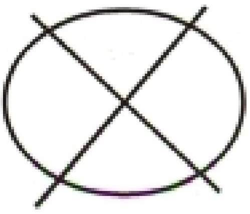

चित्र 27.26 ड्राइक्लीन न करें

टिप्पणी

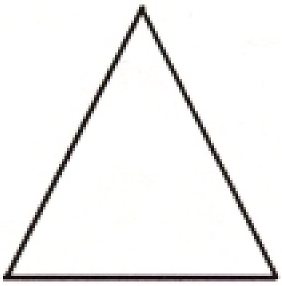

चित्र 27.27 विंराजित किया जा सकता है

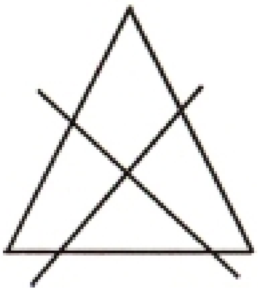

चित्र 27.28 विरंजन न करें।

पाठगत प्रश्न 27.5

1. कोष्ठक में दिये गये शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

(i) धोने से पहले वस्त्रों की .... करनी चाहिये।
(रंगाई, मरम्मत, इस्त्री, मंजाई)

(ii) .... वस्त्रों को धुलाई से पहले भिगोना नहीं चाहिये।
(रंगीन, सफेद, मैले, छोटे)

(iii) कपड़ों को भिगोने से मैल को .... में सहायता मिलती है।
(तरल करने, घटाने, ढीली करने, बचाने)

(iv) कलफ लगाने से सूती कपड़ों में ....आती है।
(निष्प्रभता, चमक, ताज़गी, फिसलन)

(v) कपड़ों को धूप में ज़्यादा देर छोड़ने से वे .... हो जाते हैं।
(चमकदार, निष्प्रभ, नीले, पीले)

(vi) .... पर सीधे इस्त्री नहीं करनी चाहिये।
(कॉलर, कफ, बाँहों, बटन)

(vii) भण्डारन करते समय अगर सूती वस्त्र गीले हों तो वे .... हो जाते हैं। (धुंधले, चमकदार, फंफूदी युक्त, चिकने)

(viii) ....पर कलफ नहीं लगाना चाहिये। (टेबल लिनन, साड़ी, कमीज़, अधोवस्त्र)

(ix) रंगीन सूती वस्त्रों को .... में सुखाना चाहिये। (धूप, छाया, बल्ब के प्रकाश, रात्रि)

टिप्पणी

2. निम्न प्रतीकों से आप क्या समझते हैं?

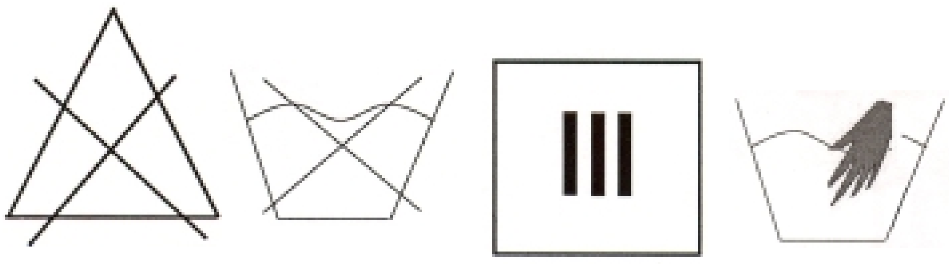

(i) (ii) (iii) (iv)

27.9 ड्राइ क्लीनिंग

यह कपड़ों की देखभाल की एक अन्य विधि है। आपके कीमती और नाजुक रेश्मी व ऊनी वस्त्रों को साफ करने के लिए ड्राइक्लीनिंग की आवश्यकता होती है। ड्राइक्लीनिंग में, साधारण धुलाई की अपेक्षा, मैल को विलायकों (Solvent) और चिकनाई अवशोषकों की सहायता से हटाया जाता है। इन विलायकों को प्रयोग करने का लाभ यह है कि ये साधारण धुलाई के पानी की तरह वस्त्र में प्रवेश नहीं करते। ये कपड़ों के रंग को भी प्रभावित नहीं करते। इनके प्रयोग से न तो वस्त्र सिकुड़ता है और ना ही अपना आकार खोता है।

जैसा कि आपको याद होगा ऊनी वस्त्र जल्दी मैले नहीं होते अतः अन्य वस्त्रों की अपेक्षा इनको जल्दी धोने की आवश्यकता नहीं पड़ती। असल में इन वस्त्रों को स्थल उपचार (spot cleaning) की आवश्यकता होती है। आप घर पर भी स्थल उपचार कर सकते हैं। मैल के धब्बे कपड़े पर चिकनाई के कारण जम जाते हैं। यदि आप उस चिकनाई को दूर कर दें तो यह धब्बा हट जाता है। इस कार्य के लिये चिकनाई अवशोषक या विलायक का प्रयोग किया जाता है। इनमें से कुछ निम्न हैं–

अवशोषक – फ्रेंच चॉक, मुल्तानी मिट्टी, पिसी मूंग दाल, बेसन, मैग्नीशियम कार्बोनेट आदि। इनका प्रयोग हर प्रकार की वस्तुओं पर से धब्बे हटाने के लिये किया जाता है।

चिकनाई विलायक – सफेद पेट्रॉल, बेंज़ीन, कार्बन टेट्राक्लोराइड, मिथाइलेटेड स्पिरिट आदि।

टिप्पणी

27.11 आपने क्या सीखा

- धुलाई
  - मरम्मत
  - धब्बे छुड़ाना
  - छंटाई
- भिगोना — केवल सूती वस्त्रों के लिये
- धुलाई
  - घर्षण – हाथ से/ब्रश से
  - सक्शन या चूषण
  - मसलना
  - मशीन की धुलाई
    - सेमी ऑटोमैटिक
    - ऑटोमैटिक
- खंगालना
- कलफ करना
  - सूती–अरारोट, मैदा, चावल का माँड
  - रेशमी – गोंद
- नील लगाना — सफेद सूती और लिनन के वस्त्रों पर
- सुखाना
- परिसज्जा
  - प्रैस करना
  - इस्त्री करना
  - भण्डारण

पाठान्त प्रश्न

1. "लॉन्ड्री" या "धुलाई" शब्द का क्या अर्थ है?
2. कपड़ों की धुलाई करना क्यों जरूरी है?
3. धुलाई की मुख्य दो विधियां बताइये और वस्त्रों के लिये उनकी उपयुक्तता भी बताइये।

4. धब्बा क्या है? धब्बे को आप किस प्रकार पहचानेंगे?
5. धब्बे छुड़ाते समय सामान्य सावधानियाँ कौन–कौन सी हैं?
6. रेशमी वस्त्र से आप निम्न धब्बे किस प्रकार छुड़ायेंगे?

   i) कॉफी ii) नेल पॉलिश iii) नीली स्याही iv) घास v) पान
7. किसी भी तरह के वस्त्र की धुलाई के तीन मुख्य चरणों की सूची बनाइये।
8. सूती कपड़े को आप किस प्रकार से धोयेंगे? इसके लिये आप कौन सी सावधानियां बरतेंगे? क्यों?
9. निम्न की धुलाई में क्या अन्तर है?

   i) रेशमी और ऊनी वस्त्र ii) सफेद व रंगीन सूती वस्त्र

   iii) ऊनी तथा कैश्मिलॉन के वस्त्र
10. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजियेः–

    i) अधिक मैले सूती कपड़ों को भिगोना आवश्यक क्यों है?

    ii) रेशमी वस्त्रों को धोते समय हल्का दबाव क्यों दिया जाता है?

    iii) रेशमी वस्त्रों की धुलाई में खंगालते समय आखिरी पानी में सिरका क्यों मिलाते हैं?

    iv) ऊनी वस्त्रों को समतल सतह पर क्यों सुखाना चाहिये?

    v) नायलॉन के वस्त्रों पर इस्त्री करते समय अधिक गर्म इस्त्री क्यों नहीं प्रयोग करनी चाहिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1 1. (i), (ii), (iii) पाठ पढ़कर उत्तर लिखिये।

27.2 1. (i) सत्य

(ii) असत्य – सिन्डेट रासायनिक रूप से प्राप्त किये जाते हैं।

(iii) सत्य

(iv) असत्य – सिन्डेट वस्त्रों पर कोई अंश नहीं छोड़ते अतः वस्त्र पीले व निष्प्रभ नहीं दिखते।

27.3 1. (i) असत्य – विरंजक को कपड़े पर लगा छोड़ा नहीं जाना चाहिये, यह वस्त्र को काफी हानि पहुँचा सकता है।

(ii) सत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

2. (i) ब्लीच (ii) सूती (iii) ऑक्जेलिक एसिड
(iv) हाइड्रोजन–पर–ऑक्साइड (अ) रिड्यूसिंग ब्लीच

27.4 (i) (b), (ii) (a), (iii) (c), (iv) (b), (v) (d), (vi) (a),
(vii) (a)

27.5 1. (i) मरम्मत (ii) रंगीन (iii) ढीली करने (iv) चमक
(v) पीले (vi) बटन (vii) फफूँदी युक्त (viii) अधोवस्त्र
(ix) छाया

2. प्रतीक चिह्न
(i) विरंजित न करें (ii) धोयें नहीं
(iii) द्रप्सशुष्कन (iv) मशीन से न धोएं

अधिक जानकारी के लिये लॉग आन करें
http://www.fabriclink.com/fabriccare.html